<u>एपिसोड - 25</u>

<u>ग्लोबल वार्मिंग और खाद्य सुरक्षा</u>

<u>या</u>

<u>गर्माती धरती और खाद्य सुरक्षा</u>

मुख्य शोध एवं आलेख :- डॉ. सुरेश भागवत

हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव

<u>पात्र:-</u>

पिता/पापा - **अधेड़ उमर लगभग 45 वर्ष**

माँ/ मम्मी - **कामकाजी महिला - 40 वर्ष**

प्रतीक - **स्कूल का छात्र (12 वर्ष)**

प्राणली / प्रनाली - **स्कूल की छात्रा (14 वर्ष)**

रमेश - **पिता का दोस्त और हम - उमर**

राधा - **रमेश की पत्नी**

दृश्य - माध्यम वर्गीय परिवार, माताजी रसोईघर में काम करती हुई, बच्चे ड्राइंगरूम / लिविंग रूम में खेलते हुए /

 # प्रारंभिक संगीत #

(कॉल बैल की ध्वनि)

माँ - तिक देखना, कौन आया है ?

प्रतिक - O.K. मम्मी

प्रनाली - (दौड़ती हुई) मैं जाती हूँ |

 # (दरवाजा खुलने की आवाज़) #

ओह ! पापा - आज इतनी जल्दी | What a surprise ?

पापा - Hello ! प्रानली, Hello प्रतिक ! बाकि लोग कहाँ है ?

प्रतिक - पापा, हम सभी, रसोईघर में मम्मी की हेल्प कर रहे थे |

पापा - हेल्प .. कैसी हेल्प (हँसते हुए)

प्रनाली - पापा ! मम्मी आज बहुत सारा फ्रूट ... जैम बना रही है |

पापा - (हँसते हुए) ... फिर तो मुझे भी किचन में चलना चाहिए |

#(पद चाप ध्वनि प्रभाव) #

प्रनाली - देखो पापा ! मम्मी कितने सारे फल खरीद कर लाई है | कह रही थी कि, बरसात का मौसम शुरू होते ही , फल और सब्जियाँ महँगी हो जाती है | वर्षा का होना तो बहुत जरुरी है और सभी के लिए लाभप्रद भी है | फिर फल और सब्जी क्यों महंगी हो जाती है ?

पापा - ये ठीक है कि, वर्षा सभी के लिए लाभप्रद है ? परन्तु वर्षा सभी जगह एक समान नहीं होती है | कही अधिक तो कही बहुत कम होती है | इससे फल और सब्जियों की उपलब्धता ok प्रभावित नहीं होती है, बल्कि खाद्य सुरक्षा बहुत कुछ इस पर निर्भर करती है |

प्रतिक - खाद्य सुरक्षा ! ये क्या बला है (हँसते हुए) क्या वर्षा खद्य पदार्थो की सुरक्षा करती है ?

पापा - इसका मतलब ये नहीं की वर्षा खाद्य पदार्थो की सुरक्षा या फिर देखभाल करती है | खाद्य सुरक्षा का अभिप्राय है कि सभी को उनकी आवश्यकता के अनुसार पर्याप्त भोजन मिल सके और इसके लिए सभी आश्वस्त हो |

प्रतिक - परन्तु हम सभी को तो आवश्यक भोजन सामग्री मिल ही रही है ना / फिर आश्वस्त की क्या बात है |

पापा - मैं यही कहना चाहुंगा की हम भाग्यशाली है, कि सभी को पर्याप्त, पौष्टिक भोजन, समय पर जो मिल रहा है | विश्व के बहुत से क्षेत्रों में अब भी पर्याप्त भोजन खाने को नहीं मिल पा रहा है | बहुत से लोग अब भी भूखे पेट सोते हैं |

प्रणाली - कितनी ख़राब बात है ? Very sad. परन्तु पापा, ऐसा क्यों है |

पापा - इसके कई कारण है | अत्यधिक जनसंख्या का होना और दूसरा है, पर्यावरण में हो रहे बदलाव, जिससे खाद्य उत्पादनों पर प्रभाव पड़ता है |

प्रणाली - पापा ! मैने पर्यावरण में हो रहे बदलावों के बारे में सुना है | परन्तु मौसम तो सदा बदलता ही रहता है | यह खाद्य- सुरक्षा को कैसे प्रभावित कर सकता है ?

पापा - मैं, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ | परन्तु, मेरे एक दोस्त है जो इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं |

प्रतिक/ प्रणाली - पापा ... आप किसकी बात कर रहे हो ?

पापा - बेटे, मैं रमेश अंकल की बात कर रहा हूँ | वह खाद्य- सुरक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है | तुम दोनों, अपनी मम्मी के कार्य में हाथ बटाओं | आज रमेश घर पर ही आ रहे है | यदि वो नहीं आया तो, हम सभी उसकी प्रयोगशाला में चलेंगे |

प्रणाली - (हँसते हुए) ये ठीक रहेगा | क्यों नहीं हम सभी उसकी प्रयोगशाला चलें |

प्रतिक - Oh ! क्या हम ऑब्जरवेशन प्रयोगशाला देखने चलेंगें |

प्रणाली - हाँ, मैं भी प्रयोगशाला के काम में आने वाले equipment देखना चाहुंगी |

#ध्वनि परिवर्तन #

पापा - हैल्लो ! डॉ. रमेश | क्या हम तुम्हारी प्रयोगशाला विजिट कर सकते हैं ? बच्चे बहुत कुछ जानना और देखना चाहते है |

डॉ. रमेश - (फ़ोन पर) you are most welcome. मुझे ख़ुशी होगी बच्चो के साथ चर्चा करके | कल सुबह आप सभी मेरी observatory में पहुँच जाये | मैं वही मिलूँगा |

पापा - ठीक है | हम राइट - टाइम पर पहुँच जायेंगे | अच्छा मैं फ़ोन रखता हूँ | धन्वाद !

ध्वनि परिवर्तन

पापा - बच्चों तैयार हो गये | अपनी मम्मी को कहो, वह भी शीघ्र कपड़े बदल ले | देर नहीं करे |

प्रतिक - O.K. पापा | we are ready. मम्मी भी तैयार हो गई है |

प्रणाली - मैं भी तैयार हूँ |

पापा - चलो मैं गाड़ी लगाता हूँ |

#कार के चलने का ध्वनि प्रभाव #

सड़क पर वाहनों की आवाज़ / हार्न आदि

पापा - चलो पहुँच गये डॉ. रमेश की प्रयोगशाला में |

(गाड़ी के रुकने का प्रभाव / गाड़ी के दरवाज़ों के खुलने की आवाज़ आदि)

मैं देख रहा हूँ, डॉ. रमेश बहार ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं |

डॉ. रमेश - Welcome ! स्वागत है आप सभी का |

प्रतिक / प्रणाली - नमस्ते अंकल !

डॉ. रमेश - नमस्ते... नमस्ते | प्रतिक और प्रनाली कैसे हो ?

पापा - डॉ. रमेश, बच्चे तो कई बार इच्छा जता चुके, तुम्हारी प्रयोगशाला देखने के लिए | उनकी इच्छा है, पर्यावरण में हो रहे बदलावों के बारे में जानने की | तुम्हारे से अच्छा, इस विषय पर ओर दूसरा कोई नहीं हो सकता है |

प्रतिक- हाँ अंकल ! Please..हम जानना चाहते हैं कि आखिर में पर्यावरण की समस्या क्या है और ये बदलाव क्यों हो रहे है ?

डॉ. रमेश - हाँ बच्चों | मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर देना चाहुंगा | हम सभी को इसका ज्ञान होना जरुरी है | अपने चारों तरफ रखे इन प्रयोगशाला उपकरणों को ध्यान से देखो | हम इन उपकरणों ok तापमान, नमी, हवा की गति आदि नापने के काम में लेते है |

प्रतिक - अंकल ! हमारे यहाँ वर्षा के मौसम में ही बारिश क्यों होती है ?

डॉ. रमेश - पृथ्वी के अलग-अलग क्षेत्रों में वर्षा का स्वरुप भिन्न- भिन्न हैं | भारत में वर्षा का मौसम निश्चित है जो जून से प्रारंभ होकर सितम्बर तक चलता है | दक्षिण-पश्चिम मानसून हवायें, देश के ज्यादातर क्षेत्रों में बारिश को लाती है | उत्तर- पूर्व मानसून हवायें, सर्दियों में देश के दक्षिण- पूर्वी भागों में वर्षा लाती है |

पापा - मानसून का हमारे देश में बहुत बड़ा योगदान है | कृषि उत्पादन मानसून की वर्षा पर ही निर्भर करता है | अच्छी मानसून का अभिप्राय है - खाद्य सुरक्षा की गारन्टी |

डॉ. रमेश - ठीक कहा ! कृषि उत्पादन और समय पर पर्याप्त वर्षा - इन दोनों का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है | जिन स्थानों पर 200 मिली - मीटर से अधिक वर्षा होती है वहाँ पर धान और गन्ने जैसी फसलों को उगाया जाता है | जिन स्थानों पर 100 मिली - मीटर के आस - पास बारिश होती है वहाँ कम पानी की जरुरत वाली फसलें उगाई जाती है | और जहाँ पर 50 मिली- मीटर से कम वर्षा होती है वहाँ पर सिंचाई के द्वारा ही फसलें उगाई जा सकती हैं |

पापा - इसके अलावा, फसलों को उचित तापमान और नमी की आवश्यकता होती है | उत्पादन के लिए अनुकूल मौसम का होना भी जरुरी है | बेमौसम कोई फसल अच्छी पैदावार नही दे सकती है | उनकी उचित ग्रोथ यानि बढ़ोतरी भी नहीं हो पाती है | चावल, गेंहूँ और मक्का की पैदावार- Food Security में अहम भूमिका अदा करती है | तीनों की अलग - अलग मौसम सम्बन्धी जरूरतें हैं | गेंहूँ के लिए ठन्डे क्षेत्र और मक्का के लिए गर्म - शुष्क क्षेत्र चाहिए |

मम्मी - दुनियाभर में इनका कितना उत्पादन होता होगा ?

पापा - प्रतिवर्ष इनका लगभग 250 करोड़ टन उत्पादन होता है | यह, प्रति व्यक्ति 300 किलोग्राम औसत बैठता है |

मम्मी - विश्व की सम्पूर्ण आबादी के लिए, यह पर्याप्त है | परन्तु फिर भी बहुत से लोग - भूखा पेट सोने पर मजबूर है |

पापा - यह इसलिए हो रहा है, क्योंकि सभी जगह, अनाज का उत्पादन समान नहीं है | बहुत से देश, अनाज उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं है | जो पैदावार होती है, कई बार अधिक महंगाई के कारण, गरीब लोग अनाज खरीदने में असमर्थ हो जाए है | इसके लिए यह जरुरी हो जाता है कि पैदावार के साथ-साथ अन्न सभी की पहुँच में भी हो |

मम्मी - अनाज बर्बाद भी तो हो जाता है |

पापा - यह एक कड़वी सच्चाई है | गर्म और नमी वाले क्षेत्रों में, अनाज पर कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है | अत्यधिक नमी के कारण, फफूंद का खतरा मंडराने लगता है | फफूंद से ग्रसित अनाज खाने लायक नहीं रहता है | चूहे भी बहुत अधिक मात्रा में अनाज को नष्ट कर देते हैं | खाली उप्लब्धता ही जरुरी नहीं है, अनाज की पौष्टिकता भी उतनी ही जरुरी है |

प्रतिक - पापा ! हमारे यहाँ , क्या पर्याप्त - अनाज का उत्पादन होता है |

पापा - हाँ . हमारे देश में पर्याप्त अनाज उपलब्ध है | आत्मनिर्भरता के लिए, हमने अनेकों कदम उठाये हैं | एक समय था, जब हमारे देश को अनाज दूसरे देशों से आयात करना पड़ता था |

डॉ. रमेश - मुझे याद है, जब हमें राशन की दुकानों के आगे लम्बी - लम्बी कतार लगानी पड़ती थी |

प्रतिक - राशन की लिए, लाइने लगानी पढ़ती थी - आश्चर्य !

प्रणाली - हमारे देश ने, किस प्रकार इसपर सफलता प्राप्त की ?

पापा - पिछली सदी के पच्चास और साठ के दशक में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही थी | हमारे निति - निर्धारकों ने अथक पर्यास किए | यह बदलाव इतना बड़ा था, जिसे हमने हरित - क्रांति का नाम दिया |

प्रतिक - इसीलिए अब कोई समस्या नहीं है | बाजार में जाये, पैसे दीजिये और जो चाहिये खरीदिए|

रमेश - उस समय यह समस्या कुछ देशों की ही थी - जिसमें एक हमारा देश भी था | अब इस समस्या से पूरा विश्व सामना कर रहा है | यह सब हो रह है - पर्यावरण में आ रहे बदलावों के कारण |

प्रणाली - मैंने, इसके बारे में सुना है | इससे ध्रूवों की बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्री जल- स्तर बढ़ रहा है | परन्तु इससे कृषि कैसे प्रभावित होगी |

डॉ. रमेश - आप जानते हैं कि पृथ्वी के अलग- अलग क्षेत्रों में मौसम एक जैसा नहीं होता है | ध्रुवीय प्रदेशों में कड़ाके की ठंड पड़ती है तो, उष्ण- कटी बंधिय क्षेत्रों में गर्मी, वर्षा आदि भिन्न - भिन्न होते है | हमारे घर, कृषि और यहाँ तक की जीवन-शैली - ये सभी मौसम अनुरूप अपनाये जाते है | परन्तु अब ये सब बदल रहा है |

प्रतिक - ऐसा क्यों ? इसके लिए कौन जिम्मेदार है ?

डॉ. रमेश - विश्वभर में तापमान और मौसम के अध्ययन के लिए प्रयोगशालायें बनाई गई है | बहुत सी जगह, बढ़ते तापमान को नापा गया है | औसत तापमान की स्थिति है बदल रही यह बढ़ रहा है | इससे सभी सहमत भी है | यदि औसत देखा जाये तो, पृथ्वी का तापमान 1°C बढ़ा है |

प्रणाली - क्या ये खतरे की घंटी नहीं है ?

डॉ. रमेश - हाँ, ये सही है | सबसे बड़ी समस्या जो नज़र आ रही है, वह है तेजी से हो रहे परिवर्तन / हमारे देश के कई क्षेत्रों में गर्मी का तापमान 40°C से अधिक रहता है|

पापा - बच्चों ! तुम्हें पता होगा - हमारे शरीर का सामान्य तापमान 37°C रहता है | वातावरण का अधिक तापमान का मतलब है ... खतरे की घन्टी (हँसते हुए) |

मम्मी - पेड - पौधे और अन्य जीव -जन्तुओं के लिए भी यह हानिकारक है |

पापा - धान और मक्का की फसलें, बढ़ते तापमान को सहन करने में सक्षम है | परन्तु गेंहूँ की फसलें इससे प्रभावित होती है | क्योंकि यह ठन्डे क्षेत्रों में ही हो सकती है | यदि गर्म हवाओं का प्रकोप बढ़ जाये तो फसल उत्पादन पर इसका कुप्रभाव पड़ता है और अन्न उत्पादन घट जाता है |

डॉ. रमेश - ग्लोबल वार्मिंग का यही असर नहीं है बल्कि और भी कई प्रभाव पड़तें हैं | गर्म हवायें और ठंड का प्रभाव स्पष्ट नज़र आने लगा है | बाढ़, सुखा, चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप बढ़ जाता है | वर्षा - अनिश्चित चक्र धारन कर लेती है |

पापा - कीट- वैज्ञानिकों ने पाया है कि वर्षा की अनिश्चिता और बढ़ते तापमान के कारण. हानिकारक कीटों का प्रकोप बढ़ जायेगा | अधिक भूख लगने के कारण - ऐसे कीट, फसलों को अधिक नुकसान पहुचाएंगे | एक अनुमान के कारण, प्रति 1°C तापमान बढने के कारण, यह क्षति 10 से 25% तक बढ़ सकती है | फल और सब्जियों की फ़सलें तो बढ़ते तापमान और कीट - पतंगों से अधिक प्रभावित होती हैं |

प्रतिक - इसका क्या संकेत निकलता है ? यानि खाद्य पदार्थो की कमी |

पापा - हमें आशा है - ऐसा नहीं होगा | हमें शीघ्र ही आवश्यक कदम उठाने होंगे | यदी ऐसा नहीं किया तो खतरे हमारे दरवाजे पर खड़े हैं |

रमेश - अधिकतर विश्व के नेताओं का यही मनना है कि ग्लोबल वार्मिंग एक सच्चाई है | हकिकत है | और मानव की गतिविधियां इसकेलिए जिम्मेदार है | सन 2015 में पैरिस में हुए समझोते में, ग्रीन -हाउस गैसों की मात्रा को कम करने पर समझोता हुआ था | परन्तु 2017 में, अमेरिका ने अपने आपको इससे अलग कर लिया |

मम्मी - क्या इसका प्रभाव पड़ेगा?

डॉ. रमेश - निश्चित ही, इसका प्रभाव पड़ेगा | क्योंकि अमेरिका, चीन के बाद, विश्व का सबसे बड़ा, प्रदूषक छोड़ने वाला देश है | सन 2015 के आकड़ों के अनुसार, अमेरिका का हर एक नागरिक, भारत के एक नागरिक से चार गुणा प्रदूषक तत्व छोड़ता है | पैरिस सम्मेलन में ग्रीन- हाउस गैसों के उत्सर्जन पर रोक लगाने के लिए सहमती बनी थी, जिससे भविष्य में पृथ्वी का तापमान 2°C से अधिक नहीं बढ़ सके | यदि अमेरिका अमल नहीं करता है तो विश्व के दूसरे देशों को और अधिक मेहनत करनी होगी |

पापा - क्या किसी देश को, इस तरह का निर्णय लेना चाहिए |

रमेश - सभी देशों ने एक स्पष्ट दृष्टीकोण दिखाया था | किस प्रकार ग्रीन - हाउस गैसों को घटाना है, यह स्पष्ट किया गया था |

प्रणाली - यदि यह इतना महत्वपूर्ण है तो सभी देशों को मिलकर कदम उठाने की जरुरत है |

प्रतिक - हाँ ! हमें कार्बन- डाई - ऑक्साइड और दूसरी ग्रीन- हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना चाहिए |

मम्मी - लोगों को कुछ करना चाहिए | यदि ऐसा नहीं किया तो विनाश हमारे सामने खड़ा है |

डॉ. रमेश - सरकार तो कानून बना सकती है और नीतियाँ लागू कर सकती है | ये विश्वभर के नागरिक ही हैं, जो सकरात्मक भूमिका निभा सकते है |

पापा - यही कारण है कि हमारी सरकार ग्रीन- उर्जा पर ध्यान दे रही है | आज सौर- उर्जा और पवन - उर्जा का प्रयोग बढ़ता जा रहा है | इससे विधुत उत्पादन में कोयले की खपत कम होगी |

प्रतिक - मेने सुना है, जल्दी ही विद्युत से चलने वाली कारें, बाजार में आने वाली है |

पापा - हाँ ... इन्हें इ- कार कहते है | इसके अलावा अल्कोहल मिश्रित पैट्रोल भी बाजार में मिलने लगेगा | इससे पैट्रोल खपत में कमी आयेगी और कार्बन उत्सर्जन कम होगा |

प्रणाली - पापा ... पापा... आप बायो- डिजल की बात कर रहे हो ?

मम्मी - हाँ ! जब हम इस प्रकार के ईंधन की चर्चा करते है तो कार्बन का पुर्णचक्रण होता है | जीवाश्म ईंधन को हम धरती से निकाल कर जब काम में लेते है तो अतिरिक्त कार्बन का उत्सर्जन, वायुमण्डल में होता है | इसका मतलब हुआ पर्यावरण की बर्बादी !

पापा - सभी देशों को शून्य - कार्बन- उत्सर्जन की दिशा में काम करने की जरुरत है | इसके बाद धीरे- धीरे कार्बन की मात्र को घटाना होगा |

प्रणाली - हम कार्बन- डाई- ऑक्साइड की मात्र किस प्रकार वायुमंडल में कम कर सकते हैं | क्या पेड मददगार हो सकते हैं ?

डॉ. रमेश - हाँ तुमने ठीक कहा | वृक्ष कार्बन को कम करने में बहुत सहायक हो सकते हैं | परुन्तु विशेषज्ञों का मनना है कि पृथ्वी' पर इतनी जगह ही नहीं जहाँ इतने सारे वृक्ष लगा सकें जो कार्बन- डाई- ऑक्साइड को कम कर सके | यह सही हो सकता है, और है बड़ा कारगर | कम कार्बन उत्सर्जन करके एवं वृक्षारोपण से सफलता पाई जा सकती है |

प्रनाली - हमारी सरकार ने इस दिशा में पर्यास शुरू कर दिये हैं | ये ख़ुशी की बात है |

पापा - सरकार ने नए वन लगाने का कार्यक्रम हाथ में लिया है | वर्षा ऋतु में पेड लगाने का अभियान चलाया जाता है | किसानों को खेतों से निकलने वाली घास- फूस और पलाई को नहीं जलाने के लिए शिक्षित किया जा रहा है | शहरों में नागरिकों को कचरे को पुन चक्रण की महत्ता के बारे में रेडियो और टेलीविजन विज्ञापनों के माध्यम से जानकारी दी जा रही है |

डॉ. रमेश - आइये मै आपको अपने घर पर ले चलता हूँ | वहाँ पर इतमिनान से बैठकर इस विषय पर बाते करेंगे |

 # (डॉ. रमेश के घर की ओर - पदचाप ध्वनि प्रभाव) #

प्रणाली - ग्रीन हाउस गैसों को कम करने में आम व्यक्ति किस प्रकार अपनी भूमिका अदा कर सकता है ?

डॉ. रमेश - Very intelligent question ! हम अपनी भूमिकाएँ कई तरीकों से अदा कर सकते हैं | उर्जा की बचत करना सीखें | वस्तुओं को बार- बार उपयोग में लाये, उन्हें फैके नहीं | स्थानीय वस्तुओं और खाद्य सामग्री का प्रयोग करें | शाकाहारी बने .....

प्रणाली - क्या इससे खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकेगी ?

डॉ. रमेश - आँकड़े बताते है कि वर्तमान में खाद्य- पदार्थो की पर्याप्त उप्लब्धता है | जरुरत है इसके सही वितरण की | अभी संकट- भविष्य में नज़र आ रहा है, क्योंकि जनसंख्या तेज गति से बढ़ रही है | जमींन और जल की उप्लब्धता कम हो रही है | मौसम में बदलाव हो रहे हैं | यह कहना कठिन है कि भविष्य कैसा होगा ?

पापा - हाँ .. डॉ. रमेश ठीक कहा | पहले तो कुछ लोग मानते ही नहीं थे कि मौसम में बदलाव हो रहा है | उनका मानना था कि वायुमंडल में कार्बन- डाई- ऑक्साइड की अधिक मात्रा पौधों की बढ़ोतरी और पैदावार में सहायक सिद्ध होगी | परन्तु प्रयोगों में वैज्ञानिकों ने पाया है कि यदि चावल की खेती अधिक कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा से की जाए तो उसकी पौष्टिकता घट जाती है | उस अनाज में प्रोटीन, विटामिन और मिनरल की मात्रा कम पाई गई है |

मम्मी - यानि कम पैदावार और वो भी घटिया | यही तो हुआ |

प्रणाली - परन्तु इस कुचक्र से कैसे बचा जा सकता है ?

पापा - विश्व भर के वैज्ञानिक फसलों की नई किस्मे तैयार करने में लगे हैं जो पर्यावरण में आ रहे बदलावों के अनुरूप अपने को ढाल सके | इनमें कीटों और रोग सम्बन्धी प्रितिरोधत्मक शक्ति होगी | इससे फसलों की पैदावार ज्योकि-त्यों बनी रहेगी |

डॉ. रमेश - अनाज पैदा करना ही पर्याप्त नहीं है, भण्डारण में, उसकी सुरक्षा करना भी उतना ही जरूरी है | नई तकनिकी के माध्यम से अनाज की मात्रा और गुणवत्ता बनाये रखना संभव हो सकेगा |

मम्मी - हम अपने घरों में बिजली, खाना बनाने वाली गैस और पानी की बचत कर सकते हैं | बस जरुरत है थोड़ी किफ़ायत की और सावधानी की | फिजूल गैस का प्रयोग न करें | अनावश्यक घर की लाईट और बल्ब न जलायें | इससे पैसे भी बचेंगे और उर्जा भी ...|

डॉ. रमेश - (हँसते हुए) आपने ठीक कहा - भाभी जी | हमारा एक ही उद्देश्य होना चाहिए - संसाधनों की कम खपत और वस्तुओं का पुनर्चक्रण.... कृषि के लिए नई तकनीकों को अपनाया जाना चाहिये जैसे की पोलि- हाउस और बून्द-बून्द सिचाईं पद्धति |

#(डॉ. रमेश के घर में प्रवेश करते हुए) #

डॉ. रमेश - राधा ! वो राधा ! देखो कौन आये हैं ?

राधा - नमस्ते भाई साहब ! नमस्ते भाभी जी |

पापा / मम्मी - नमस्ते- नमस्ते ! What a surprise /

बच्चे - नमस्ते आंटी ! (एक साथ)

राधा - नमस्ते ! This is good that Parnali & Prateek are here. Real surprise (हँसते हुए)

आप सभी का स्वागत है | डॉ. रमेश ने मुझे फ़ोन पर सब बता दिया था |

मम्मी - राधा ... बड़ी खुशबू आ रही है |

राधा - भाभी जी - आप सभी थके हुए होंगे, इसलिए मैने स्नेक्स और चाय तैयार करके रखी हुई है | मैं अभी लाती हूँ |

 # ध्वनि प्रभाव #

डॉ. रमेश - राधा को नये- नये पकवान बनाने का बड़ा चाव रहता है | यही नही.. वह उर्जा बचत का भी पूरा ध्यान रखती है | ये सब हमारे kitchen garden की उपज है | स्वस्थ है , पौष्टिक है और ऑर्गनिक भी | हम भी खाद्य सुरक्षा में अपनी भूमिका निभा रहे है (हँसते हुए)|

मम्मी - तुम्हारे चेहरे की रोनक और चमत का यही राज लगता है |

पापा - तुम्हारा किचन गार्डन- यो ही फले - फूले, ताकि हमें भी यदा- कदा पौष्टिक सब्जियाँ खाने को मिल सके | (हँसते हुए)

राधा - तुम्हारा सदैव स्वागत है | आज आप घर की बनी स्नेक्स खाये भी और, मेने ये कुछ सब्जियां तुम्हारे लिए तोड़ कर रखी हुई है, इन्हें ले जाइये |

 # वाह घर की बनी चीजों का स्वाद ही कुछ और है #

 # समाप्ति संगीत #

****